भारोपीय भाषा-परिवार का सामान्य परिचय

विश्व की भाषाओं को विभिन्न परिवारों में बाँटने के अनेक प्रयास हुए, किंतु कोई निर्णायक मत नहीं दिया जा सका। सन् 1822 में जर्मन विद्वान् विल्हेन वॉन हम्बोल्ट ने 13 भाषा-परिवार निर्धारित किए। इसी प्रकार एल्.एच्. ग्रे ने 26, फ्रेडरिक मूलर ने 100, डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 13, वार्टरिज ने 13, डॉ. अमर बहादुर ने 12 तथा आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने 18 भाषा-परिवार स्वीकार किए।

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने 18 भाषा-परिवारों को ध्वनि, पद, वाक्य और अर्थ की साम्यता के आधार पर चार खंडों में विभाजित किया-

(i) यूरेशिया-खंड, (ii) अफ्रिका-खंड, (iii) प्रशांत-महासागरीय-खंड और (iv) अमेरिका-खंड।

उपर्युक्त यूरेशिया-खंड में 10 भाषा-परिवार हैं-

(क) भारोपीय-परिवार, (ख) द्राविड़-परिवार, (ग) बुरुशस्की-परिवार, (घ) यूराल-परिवार, (ङ) यूराल-अल्टाई-परिवार, (च) काकेशी-परिवार (छ) चीनी-परिवार (ज) जापानी-कोरियाई-परिवार (झ) अत्युत्तरी हाइफाबोरी-परिवार (ञ) बास्क-परिवार और (ट)सामी-हामी- परिवार।

(क) भारोपीय परिवार-विश्व के सभी भाषा-परिवारों में भारोपीय परिवार का अतिशय महत्त्व है। विश्व की सभी भाषा-परिवार इस परिवार का ऋणी माना जाता है। रचना की दृष्टि से इस परिवार की सभी भाषाएँ प्रारम्भ में योगात्मक थीं, किंतु कालांतर में इसकी बहुत सारी भाषाएँ अयोगात्मक हो गईं। भारोपीय परिवार की भाषाएँ भारत (उत्तरी भारत), अफगानिस्तान, ईरान और यूरोप में बोली जाती हैं। इस प्रकार इस भाषा-परिवार का विस्तार एशिया महाद्वीप से आरंभ होकर यूरोप महादेश तक है, और भारत एशिया महादेश का एक बड़ा और प्रसिद्ध देश है, इसीलिए इस भाषा-परिवार का नाम भारोपीय भाषा-परिवार रखा गया। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन इत्यादि प्राचीन तथा अँगरेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिंदी, मराठी, गुजराती, पंजाबी तथा बंगला इत्यादि आधुनिक भाषाएँ भारोपीय परिवार की हैं।

भारोपीय परिवार की भाषा की विशेषता के सम्बन्ध में आचार्य कपिलदेव द्विवेदी ने लिखा है-

भारोपीय परिवार वैशिष्ट्यं दशकं मतम्।
श्लिष्टयोगात्मकत्वं तु प्रकृतिप्रत्ययात्मता।।
एकाक्षरत्वं धातूनां सुप्-तिङौ कृच्च तद्धिताः।
स्वातन्त्र्यमुपसर्गानां पदमूला च वाक्यता।।
प्रत्ययार्थानभिव्यक्तिः समासाभिरुचिस्तथा।
अपश्रुतेः प्रयोगश्च प्रत्याधिक्यमेव च ।।

अर्थात् भारोपीय परिवार की दस विशेषताएँ हैं-

(i) श्लिष्टयोगात्मक, (ii) प्रकृति-प्रत्ययात्मकता, (iii) धातुओं का एकाक्षरत्व, (iv) सुप्-तिङ्-कृत-तद्धित-प्रत्ययात्मकता, (v) उपसर्गों का स्वातन्त्र्य (vi) पदमूला वाक्यता, (vii) प्रत्ययार्थानभिव्यक्ति, (viii) सामासिकाभिरुचि, (ix) अपश्रुति प्रयोग और (x) प्रत्यया- धिक्य।

अध्ययन की सुविधा के लिए इस परिवार की भाषाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है-

1. शतम्-वर्ग और 2. केण्टुम-वर्ग। आचार्य कपिलदेव द्विवेदी के शब्दों में-

ईरानी-भारती चैव बाल्टो-सुस्लाविकी।
आर्मीनी अल्बनी चैताः शतम् वर्गे समाश्रिताः।।
इटालिकी च ग्रीकी च जर्मानिक केल्टिकी तथा।
हित्ती तोखारिकी चैताः केन्टुमवर्गे प्रकीर्तिताः।।

भारोपीय परिवार के उपर्युक्त दोनों विभाजन इस परिवार की भाषाओं में उपलब्ध 'शत' शब्द की दो विभिन्न रूपों के कारण है। शतम्-वर्ग की प्रमुख भाषा संस्कृत है। सौ को संस्कृत में शतम् कहते हैं, अवेस्ता में सतम् कहा जाता है। द्वितीय वर्ग की प्रमुख भाषा लैटिन है, लैटिन में सौ को केन्टुम् कहा जाता है।

शतम् वर्ग	**केन्टुम वर्ग**
(i) संस्कृत-शतम्	(i) लैटिन-केन्टुम्
(ii) हिंदी-सौ	(ii) ग्रीक-हेक्टोन
(iii) अवेस्ता-हतम्/सतम्	(iii) केल्टिक-केत
(iv) फारसी-सत/सद	(iv) तोखारी-कन्ध
(v) स्लाविक (रूसी)-स्तो	(v) इटालियन-केन्तो

(vi) बाल्टिक-जिम्तास
(vii) लिथुआनियन -शिम्तास
(viii) गाथिक-हुन्ड
(vi) फ्रेंच-केन्त
(vii) जर्मन-हुन्डर्ट
(ix) अँगरेजी-हन्ड्रेड